डॉ. यशोधरा भटनागर

बेटा

उफ्फ! ये तेरह दिन तेरह कल्प सम प्रतीत हो रहे थे ।उसका अंग-अंग दर्द हो रहा था। वृक्ष से कटी हुई डाली सी वह धड़ाम से पलंग पर गिर गई ।आँखें मुंद रही थीं और देह थोड़ी तप्त अनुभव हो रही थी।शायद ज्वर है,कुछ भी महसूस करने का समय कहाँ!

अंगार आँखें ,नम हो सजल बरस गईं जिसे नर्म ,नाजुक, कोमल तकिए ने चुपचाप समेट लिया ।

विगत दिनों का अप्रिय घटनाक्रम फिर से चलचित्र की भांति दौड़ने लगा। इन चंद दिनों में कितना कुछ बदल गया है।पापा का इस तरह एकाएक चले जाना जीवन में सुनामी से कम कहाँ!

फोन की वह हृदय-कंपित घनघनाहट ,फरीदाबाद से द्वारका तक की वह लंबी यात्रा,माँ का डरा-सहमा, वह भयाक्रांत चेहरा,हृदय और आँखों के तूफान को उसने कैसे संभाल लिया और फिर संभालती ही रही ? कैसे बेटियों की माँ, सत्य को समझती -बूझती ,जलती- बुझती रही! और अश्रुपूरित आशापूरित कातर नेत्रों से माँ उसे ही एकटक देखती रहीं।वह एकाएक बेटा बन गई, और बेटियों की माँ को उसने पूत वाली बना दिया।

चार कंधों पर पिता की अंतिम यात्रा, अग्नि कुंभ लिए वह आगे चलती रही। सारे अंधड़-तूफान अंदर ही अंदर संभालती चली गई ।रूखे बाल, सूखे नेत्र और अंतर के आर्तनाद को छिपाए गहरी शांति का भाव लिए वह सधे हुए कदमों से आगे बढ़ती रही। स्वयं पिता की पार्थिव देह को अग्नि देव को सौंप अंदर तक हिल गई।

हृदय विदारक असहनीय दृश्य, सहन करने के लिए वह कोमलांगी , कैसे और कहाँ से पाषाण हृदय जुटा लाई? रह-रहकर अग्नि की तीव्रता से उठती लपटें सब कुछ लील रहीं थीं,हृदय हाहाकार कर,चीत्कार कर उठा पर शुष्क नेत्र अनुशासनबद्ध थे।वह आँसू नहीं बहा सकती।उसके कंधों पर माँ और छोटी बहन की जिम्मेदारी है।वह बेटी नहीं बेटा है,उसकी माँ पूतवाली है।ऊपर को उठती ज्वालाओं में उसके आँसू छन्न से जल उठे,पर तप्त हृदय में कोमलता शेष थी । स्वयं से

लड़ते ,संघर्ष करते, तेरह दिन बीत गए । नाते रिश्तेदारों ने अपनी -अपनी राह पकड़ ली।सन्नाटा पसरे घर में रह गए बस हम तीन माँ ,छोटीऔर वह। सन्नाटा गहरा गया,सन्न-सन्नाटा कोलाहल कर उठा। सारे बाँध तोड़ पहले उसका हृदय रोया ,फिर नेत्र निर्बंध ,अनुशासनहीन

हो बरस पड़े।

समय बीतता गया। सवा महीना बीता न बीता, अपनापन छलकाते ,नाते रिश्तेदारों के फोन घनघनाने लगे। बातचीत का वही चिरपरिचित विषय,बेटियों की शादी के प्रपोजल। माँ का मन अभी ठहरा ही कहाँ था?पर दिल पर पत्थर रखकर,बरसती आँखों पर पहरा बैठाकर, सब से बात करतीं

-"देखती हूँ ।","ठीक है...बच्चों से बात करती हूँ।"और दीर्घ निश्वास के साथ फोन रख देतीं। दोनों अभी विवाह के लिए तैयार नहीं थीं पर रिश्तेदार थे कि वे क्यों मानने वाले थे? उनके अपने तर्क थे। बड़ी तो अच्छी सरकारी नौकरी है पर छोटी!ग्रेजुएशन के बाद से ही घर बैठी है। छोटी का आगे क्या होगा?

क्या करे? लड़कियों को किसी के भी गले यूँ ही बाँध दें। घबरा कर माँ अपनी बेटियों को गले से लगा लेती हैं। और फिर न जाने कहाँ से आँसू उसके कपोलों पर जगह पा जाते। इंदु बड़े प्यार से माँ के आँसू पोंछ तो माँ उसे देख मुस्कुरा देती।माँ-बेटी दोनों गले लग एक दूसरे को सम्हालतीं।

उसे तो नौकरी पर जाना ही था।वीकेंड में ही आ पाती है। रविवार की शाम फिर वही वापसी की तैयारी होती।

अतीत गलियारों से धीरे-धीरे गुजरते हुए कई तस्वीरें उभर आईं-नन्ही सी वह और छोटी सी छुटकी। कभी पापा के कंधे पर सवार कभी बारी -बारी से पापा पर घुड़सवारी करती दोनों बहनें ! कैसे मजबूती से पापा ने पूरे परिवार का भार अपने कंधों पर उठा रखा था। उनके रहते मजाल, कोई भी चिंता ,कोई भी टेंशन उन्हें छू भी जाए। पापा की लाडली ! दिन भर काम ,और देर रात घर लौटने पर भी दोनों के साथ मस्ती और ढेर सारी बातें ! बहुत सारी मजेदार बातें,मोटिवेशनल -पॉजिटिव थिंकिंग से जुड़ीं बातें ।

पापा की गाइडेंस से ही तो वह भी इतनी बड़ी कंपनी में मैनेजर पद पर पहुँच पाई थी। पापा की ग्रीवा गर्वोन्नत हो गई।

और माँ! परंपरागत भारतीय नारी ! घर की चारदीवारी में रहकर ही मुस्तैदी से घर को संभाला हुआ था। बाहर पापा के साथ ही जाना होता।

और अब अकेले!पूरी जिंदगी अकेले!नहीं वे

अकेली कहाँ हैं ? उनकी बेटी है न,घर की सारी जिम्मेदारियाँ वह ही उठाएगी और उसके सपने! वो सुनहरे सपने जो उसने रोहन के साथ बुने थे उनका क्या ?

एक दीर्घ निश्वास के साथ? उसने आँखें बंद कर ली और अपने सारे सपनों को उम्र कैद दे वह कुछ निश्चिंत हुई।तपस्विनी सदृश इंदु ने भागते मन को थाम लिया।

फिर अनमने मन से बस यूँ ही सामने टेबल पर रखे न्यूज़पेपर को पलटने लगी। मैट्रिमोनियल!ऊपर से नीचे तक वांटेड ब्राइड की फेहरिस्त को नाप लिया । छोटी की शादी जो करनी थी। हृदय में कसक उठी। सौम्य, शांत ,धीर ,गंभीर रोहन का चेहरा उसके सम्मुख उतर आया। उसकी बड़ी -बड़ी आँखें जिनमें खोकर, वह सब कुछ भूल जाती थी।एक दूजे का हाथ थामे कितने ही कदम दोनों ने साथ नापे थे और कितने ही कदम साथ नापने का वादा एक दूजे के साथ किया था।

हृदय में एक गुबार सा उठा। जिसके धुंधलके में सब कुछ खो गया।

फिर वही निस्तब्धता! केवल निस्तब्धता। छत पर घूमते पंखे और फड़फड़ा ते न्यूज़पेपर के स्वर को चीरती, एक भारी भरकम आवाज़,

"इंदु कब से तुम्हें पुकार रहा हूँ और तुम कि न जाने कहाँ खोई हुई हो?चलो न कहीं बाहर चलते हैं फिर डिनर भी साथ ही ले लेंगे।"

"नहीं रोहन वी हैव टू स्टॉप हियर नाउ।पापा के जाने के बाद परिस्थितियाँ बदल गई हैं ।अब पूरी फैमिली की रिस्पोंसिबिलिटी मेरे ऊपर है।"

"मेरे नहीं हमारे ऊपर हैं।"रोहन ने इंदु की बात बीच में ही काटते हुए कहा।

"इंदु पहले हम छुटकी की शादी करेंगे और उसके बाद ही हम अग्नि के फेरे लेंगे।"

"और माँ? माँ का क्या ?वो अकेले कैसे रहेंगी?"

"पगली ! माँ हमारे साथ रहेंगी।मैं तो उनका बेटा ही हूँ।"

रोहन की उन्मुक्त हँसी उसके अंतर तक पहुँच गई।हवा के हल्के झोंके के साथ विंडचैम की मृदु स्वर लहरी पूरे घर में तरंगित हो गई।